an>

Title: Regarding including the life of Jhalkaribai Kori in the school history books.

**श्रीमती अनुप्रिया पटेल (मिर्ज़ापुर):** माननीय उपाध्यक्ष जी, देश की आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वालों का यदि स्मरण किया जाए तो बहुत सारे पुरुषों का नाम अनायास ही याद आ जाता है लेकिन बहुत सारी महिलाओं के नाम इसलिए नहीं याद आ पाते हैं क्योंकि कहीं न कहीं इतिहास में हम अपनी वीरांगनाओं को पर्याप्त महत्व देने में चूके हैं। 1857 की स्वतंत्रता संग्राम की पहली चिंगारी में रानी लक्ष्मीबाई का नाम तो पूरा देश जानता है लेकिन उनकी सेना की सबसे बहादुर सैनिक झलकारीबाई कोरी का नाम आज भी देश की जुबान पर नहीं आ पाया है। इन्होंने झांसी के किले के लिए अंग्रेजों के साथ संघर्ष के दौरान रानी लक्ष्मीबाई को सुरक्षित किले से बाहर निकालने के लिए स्वयं रानी लक्ष्मीबाई बनकर अंग्रेजों का सामना किया था। यह सच सामने आने पर अंग्रेजों ने उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया था। आज भी बुंदेली लोक कथाओं में झलकारीबाई कोरी के बलिदान की गाथा गाई जाती है। मेरा आपके माध्यम से मानव संसाधन विकास मंत्री जी से अनुरोध है कि झलकारीबाई कोरी के संघर्ष के विवरण को स्कूली शिक्षा के इतिहास के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए ताकि देश की आने वाली पीढ़ियां आजादी के लिए लड़ी इस वीरांगना के बारे में जान सकें।

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri P.P. Chaudhary, Dr. Satyapal Singh, Shri Bhairon Prasad Mishra, Shri Birender Kumar Choudhary, Shri Vinod Kumar Sonkar, Kunwar Pushpendra Singh Chandel permitted to associate with the issue raised by Shrimati Anupriya Patel.